वार्तालाप-522, सीहोर (मध्य प्रदेश), दिनांक 25.02.08
Disc.CD No.522, dated 25.2.08 at Sehore (Madhya Pradesh)

समयः 00.01-04.00
जिज्ञासुः बाबा, भक्तिमार्ग में गुरुवार को जो उपवास करते हैं लोग और सत्यनारायण की कथा पढ़ते हैं और कहते हैं कि नेल्स (नाखून) नहीं काटने चाहिए, बाल नहीं धोते हैं, घर की सफाई नहीं करते हैं – इसका क्या? बल्कि उपवास के दिन तो लोगों को ज्यादा सफाई, ज्यादा अच्छा करना चाहिए। तो उसको मना करते हैं वो।
Time: 00.01-04.00
Student: Baba, in the path of *bhakti*, people observe fast (*upvaas*) on Thursday (*gurvaar*) and read the story of Satyanarayana and say that we should not cut nails; we should not wash our hair (on that day). They do not clean the house. What about this? Whereas people should maintain more cleanliness on the day of fasting and should do better things. But, they ask us not to do that.

बाबाः जिसको कहते हैं सद्गुरूवार जितने भी और ग्रह हैं उन ग्रहों में बड़े-बड़े ते बड़ा ग्रह कौनसा है? ब्रहस्तपति। वो ब्रहस्तपति पतियों का पति कहा जाता है। और कौनसे युग में आकरके बनता है पतियों का पति? ये संगमयुग ही है जिसमें आकरके पतियों का पति बनता है। परंतु जो भी संगमयुग है उसमें पवित्र प्रवृत्ति मार्ग लंबे समय तक चलता है शूटिंग पीरियड में या थोड़े समय चलता है संगमयुग में? जब तक पुरूषार्थी जीवन है तब तक अपवित्र प्रवृत्ति मार्ग ही चलता है। क्योंकि बाप, सद्गुरू क्या है और कैसे है? उसका महत्व क्या है ये बुद्धि में बैठता नहीं है। तो संगमयुग का लंबा समय अपवित्रता में ही चला जाता है। भल पतियों का पति बाप इस सृष्टि पर आ जाता है। प्रत्यक्षता ना होने के कारण अपवित्रता का ही बोल बाला रहता है। और पवित्र प्रवृत्तिमार्ग जब शुरू भी होता है तो बहुत थोड़ी आत्मायें पुरूषार्थी ऐसे निकलती हैं जिनके द्वारा नई सृष्टि का फाउन्डेशन पड़ता है जो सद्गुरू बाप के महत्व को समझती हैं और उसके डायरेक्शन पर चलती हैं। इसलिए भक्तिमार्ग में इस समय को ही फॉलो कर लेते हैं। बाकी ऐसे नहीं है कि परमात्मा बाप के जो अव्वल नम्बर बच्चे हैं, अष्टदेव कहे जाते हैं वो कोई निवृत्ति मार्ग के हैं। भल आखरी जन्म में जाकरके अपवित्र बनते हैं, माया के प्रभाव में आ जाते हैं परंतु फिर भी उनको भी समझने में 80 वर्ष का टाईम लग जाता है। इसीलिए सद्गुरूवार का जो महत्व है व्रत भी रखते हैं परंतु जो पवित्रता पालन करनी चाहिए वो पवित्रता पालन नहीं कर पाते भक्त लोग। इसलिए भक्तिमार्ग में यहां की यादगार दिखाई है।
Baba: As regards *Sadguruvaar* (Thursday); among all the planets, which is the biggest one? Jupiter (*Brihastpati*). That *Brihastpati* is called the highest among all husbands. And in which Age does he become the highest among all the husbands? It is this very Confluence Age in which He comes and becomes highest among all husbands. But in the Confluence Age, does the pure path of household continue for a long period in the shooting period within the Confluence Age or does it continue for a short period? As long as it is a *purusharthi* life (life of making spiritual effort), the impure path of household continues because the importance of who and how is the Father and *Satguru* does not sit in the intellect. So, a long period of the Confluence Age is

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

spent in impurity only. Although the highest among all the husbands comes in this world, there is domination of impurity as He is not revealed. And even when the path of pure household begins, there are very few *purusharthi* (those who make spiritual effort) souls who lay the foundation for the new world, who understand the importance of the *Satguru* Father and follow His directions. This is why in the path of *bhakti*, they follow the present time. As for the rest it is not so that the 'number one' children of the Supreme Soul Father, who are known as the eight deities belong to the path of renunciation. Although they become impure in the last birth, although they come under the influence of Maya, even they take 80 years time to understand. This is why although there is importance of *Satguruwaar* (Thursday), although they fast, the devotees are unable to follow the purity that they should follow. This is why the memorial of the present time has been shown in the path of *bhakti*.

समयः 12.55-16.00

जिज्ञासुः बाबा, तीन प्रकार की जंजीरें बताई हैं – लोहे की, सोने की और हीरे की। ये किस प्रकार की होती हैं?

बाबाः लोहे की जंजीर माना देह का परिवार। जहाँ देह ने जन्म लिया, देह के संबंधियों की जंजीर। दैहिक परिवार से छूट गए, ब्रह्मा के बच्चे बन गए, ब्राह्मणों के परिवार में आ गए, बेसिक नालेज में आ गए या एडवान्स नालेज में आ गए तो सच्चे परिवार में आ गए। सच्चाई अर्थात सोना। वहाँ सोने के बंधन लगते हैं क्योंकि आत्मा को पता लग जाता है कि यहाँ का जो संग का रंग है वो अनेक जन्मों की शूटिंग करता है। तो लगाव लग जाता है। ये सोने की जंजीर हो गई अलौकिक ब्राह्मण परिवार में। सोना ज्यादा कॉस्टली होता है। लोहा तो उतना कॉस्टली नहीं होता। इसीलिए सोना बहुत लुभावना होता है। खास करके जिनमें देहभान ज्यादा होता है उनके लिए। जैसे लौकिक परिवार में मानते हैं सोने से ज्यादा प्यार कन्याओं माताओं को होता है या भाईयों को होता है?

किसीने कहा- माताओं को।

बाबा- तो सोने की जंजीर ज्यादा कॉस्टली हो जाती है। होती ही है। और तोड़ना बहुत मुश्किल होता है। तो ये सोने की जंजीर से भी जो परे जाते हैं वो भगवान बाप से प्राप्ति करते हैं। मालाओं में आते हैं, राजयोगी बन करके जन्म-जन्मांतर के राजायें बनते हैं, राज परिवार में आते हैं।

Time: 12.55-16.00

Student: Baba, three kinds of chains (*zanzeer*) have been mentioned, [the chain of] iron, the golden [chain] and the [chain of] diamond. What kind of chains are these?

Baba: The iron chain means the family of the body; the place where the body was born, the chain of the relatives of the body. When you become free from the bodily family, when you become the children of Brahma, when you enter the Brahmin family, when you obtain the basic or the advance knowledge, you enter the true family. Truth means gold. There you become entangled in golden bondages because the soul comes to know that the colour of company of this place causes the shooting of many births. So, you develop attachment (*lagaav*). This is a golden chain in the *alokik* Brahmin family. Gold is more costly. Iron is not so costly. This is why gold is more attractive, especially for those who are more body conscious. For example, in

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

the worldly family, who is believed to love gold more? Is it the virgins and mothers or the brothers?
Someone said: The mothers.
Baba: So, the golden chain becomes costlier. It is costly anyway. And it is very difficult to break it. So, those who go beyond even this golden chain achieve attainments from God. They come in the rosaries. They become kings for many births after becoming *rajyogis*. They come in the royal family.

<u>समयः 16.02-27.50</u>

जिज्ञासुः बाबा, बोला है ब्रह्मा के लिए कि ५० वर्ष कम हो जाते हैं। जैसे कि त्रेता में जाके १३ जन्म हो जाते हैं। जिससे ८४ जन्म पूरे हो जाते हैं। तो बाबा ये ब्रह्मा की जो आयु ५० वर्ष कम हुई है वो कब से कब तक है?
बाबाः पहली बात आप ब्रह्मा अव्वल नम्बर मानते किसको हैं? आपकी कौनसे ब्रह्मा के ऊपर बुद्धि टिकी रहती है?
जिज्ञासु: नहीं बाबा त्रेता में जो...
बाबा: हम जो पूछ रहे हैं पहले वो तो बता दो।
जिज्ञासु: बाबा ये मेरा क्वेश्चन नहीं है।
बाबा: पैंतरा बदल लिया। अच्छा जिसका भी क्वेश्चन हो। आपको ब्रह्मा बाबा बना दिया। जिसका क्वेश्चन है वो शिवबाबा बन गया। तो क्वेश्चन किसीका भी हो।
Time: 16.02-27.50
Student: Baba, it has been said for Brahma that 50 years are reduced (from his part). For example, he takes 13 births in the Silver Age which completes his 84 births. So, Baba from which year to which year is the 50 years period reduced from Brahma's part?
Baba: The first thing is that, whom do you consider to be the number one Brahma? On which Brahma does your intellect remain focused?
Student: No Baba, in the Silver Age....
Baba: First answer my question.
Student: Baba, this is not my question.
Baba: You have changed track. OK, it may be anybody's question. He made you Brahma Baba (i.e. a middleman). The one who actually asked the question happens to be Shivbaba. So, the question may have been asked by anyone.

मुख्य बात है हमारा कानसन्ट्रेशन कौनसे ब्रह्मा के ऊपर रहता है? हम कौनसे ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण हैं? प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण हैं। ब्रह्मा तो चार-पांच भी हैं। अव्वल नम्बर, द्वएम नम्बर, तीसरा नम्बर, फोर्थ क्लास, फिफ्थ क्लास। हमारी बुद्धि का कानसन्ट्रेशन...। जैसे कोई लौकिक दुनियाँ में राजपूत बाप का, राजपूत घराने का बच्चा होता है। तो उसकी बुद्धि में अपने कुल की कान रखने के लिए कौनसा बाप याद आता है? राजपूत बाप ही याद आवेगा ना? ऐसे ही यहाँ भी एडवांस में आने के बाद ये अपने को देखना है कि शुरूवात से लेकरके, जबसे एडवान्स में आये हैं तबसे लेकर अब तक ब्रह्मा कहने पर बुद्धि कौनसे ब्रह्मा के ऊपर टिकती है। अगर अव्वल नम्बर ब्रह्मा जो प्रजापिता ब्रह्मा है, उसके ऊपर बुद्धि टिकी हुई है तो उसकी

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

सौ साल आयु कब पूरी होती है? 76 में। 60 साल उसमें एड कर दिए क्योंकि 76 में ब्रह्मा सूक्ष्म वतन वासी हो जाता है। सूक्ष्म वतन वासी सिर्फ शरीर से ही होता है या बिना शरीर के भी होता है? जैसे दादा लेखराज। शरीर नहीं रहा तो भी सूक्ष्म वतनवासी हुआ ना? तो क्या ऐसी आकारी स्टेज शरीर रहते बन सकती है या नहीं बन सकती है? बन सकती है। तो वो पहली-2 स्टेज है पहले ब्रह्मा की। शरीर छोड़ने की बात नहीं।

The main subject is, our concentration remains fixed on which Brahma? Which Brahma's children are we Brahmins? We are Brahmins, children of Prajapita Brahma. there are four-five Brahmas too. Number one, number two, number three, fourth class, fifth class. The concentration of our intellect... . For example, someone is a child of a Rajput father, of a Rajput family in the outside world. So, which father does his intellect remember to maintain the honor of his family? He will remember only the Rajput father, will he not? Similarly, even here, after entering the [path of] advance [knowledge], we should check ourselves, since the beginning, ever since we came to the advance [knowledge] up until now, on which Brahma does our intellect become focused when we say Brahma. If the intellect is focused on the number one Brahma who is Prajapita Brahma, when does his age of 100 years complete? In (19)76. 60 years were added to it because Brahma becomes a subtle world dweller in (19)76. Does someone become a subtle world dweller along with the body or does he become this without a body too? For example, Dada Lekhraj. He became a subtle world dweller although he didn't have a body, didn't he? So, can someone achieve such a subtle stage while living in the body or not? He can. So, that is the first stage of the first Brahma. It is not about leaving the body.

आकारी स्टेज में बुद्धि आ जाए, मनन-चिंतन-मंथन की स्टेज में आ जाए, नई दुनियाँ में बुद्धि भ्रमण करने वाली बन जाए, नई दुनियाँ बनाने के लिए ईश्वरीय सेवा की प्लानिंग में बुद्धि लग जाए उसको कहेंगे आकारी स्टेज। शरीर नहीं रहा स्थूल। तो उसको कहेंगे 60 वर्ष कम हो गए। क्यों? क्योंकि स्थूल शरीर होते हुए भी जैसे की नहीं रहा। देह और देह की दुनियाँ वालों के लिए उसका कोई महत्व नहीं रहा। देह के संबंधी, देह के पदार्थों के लिए वो शरीर नहीं है। अव्यक्त वतन वासी हो गया। तो 60 साल सृष्टि में से कम कर दिए। कौनसा सन् आता है? 36 आता है। 36 आवेगा और ये साकार शरीर लुप्त हो जावेगा। माना पांच तत्वों से तमोप्रधानता से बदलते सतोप्रधानता में आ जावेगा।

The intellect should reach a subtle stage, it should reach the stage of thinking and churning; the intellect should be wandering in the new world, the intellect should become busy in the planning of Godly service for establishing the new world. That will be called the subtle stage. (It is as if) The physical body does not exist [any more]. So, for this, it will be said that 60 years have been reduced. Why? It is because despite the existence of the physical body, it is as if it does not exist. Its importance does not exist for the body and for the people of the world of the body. That body does not exist for the relatives, for the materials of the body. He becomes a resident of the subtle world (*avyakt vatan vasi*). So, 60 years were reduced from the world (cycle). Which year comes? (20)36 comes. (20)36 will arrive and this corporeal (*sakar*) body will vanish, i.e. these five elements will change from *tamopradhan* (dominated by darkness and ignorance) to *satopradhan* (consisting the quality of goodness and purity).

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बर्फ में जब तक कोई आत्मा न दबे अपने शरीर के साथ तो कोई सतोप्रधान बन जावेगा क्या? नहीं बनेगा। और पांच तत्वों का परिवर्तन शरीर का तब होगा जब सारी दुनियाँ पर बर्फ ही बर्फ आच्छादित होता है। पांच तत्व आच्छादित हो जायें। तब तक ये शरीर सड़ते जावेंगे और आत्मा पावरफुल होती जायेगी याद की यात्रा से। 60 साल ये भी गाए हुए हैं। ये 60 साल तक प्रजापिता का शरीर रहेगा परंतु कौनसी स्टेज में रहेगा? बच्चे तुमको घड़ी-घड़ी अभ्यास करना है, अभी-2 आकारी, अभी-2 साकारी, अभी-2 निराकारी। और जो विनाश के समय में मुकाबला करने वाली आत्मायें होंगी जितनी पावरफुल आत्मायें होंगी उतने लम्बे समय तक विनाश के टाईम में तामसी पांच तत्वों का भी मुकाबला करेंगे। प्रकृति तमोप्रधान होती जावेगी और आत्मा पावरफुल होने की वजह से प्रकृति के आघातों को सहन करते हुए अस्तित्व में बनी रहेगी।

Unless a soul buries itself in ice along with its body, will anyone become *satopradhan*? He will not. And the transformation of the five elements of the body will take place when the entire world becomes covered by ice and only ice. The five elements should be covered. Until then these bodies will go on rotting, and the soul will go on becoming powerful through the journey of remembrance. These 60 years are also famous. Prajapita's body will survive these 60 years, but in what stage will it remain? Children, you have to practice this every moment, just now the subtle [stage], just now the corporeal [stage] and just now the incorporeal [stage]. And the souls that confront (the natural calamities) at the time of destruction, the more powerful they are, the longer they will be able to face the degraded five elements at the time of destruction. The nature will go on becoming *tamopradhan* and the soul will remain in existence by tolerating the attacks of nature due to being powerful.

और जिस ब्रहमा ने शरीर छोड़ दिया 68-69 में साकार शरीर छूट गया, फिर सूक्ष्म वतन वासी बने, सूक्ष्म शरीरधारी उनके लिए भी कहेंगे कि 50 साल कम हो जाते हैं। क्योंकि वो आत्मा 2018 में पढ़ाई पूरी कर लेती है। उसकी पढ़ाई पूरी हुई माना दुनियाँ में जोर से लड़ाई शुरू हो जावेगी। वो बाप का खास सिकीलधा बच्चा है। इस बमभोर को आग लगने से पहले उस आत्मा का सम्पन्न होना ज़रूरी है। बाप अकेला सदाकाल के लिए निराकारी स्टेज वाला नहीं बन सकता। बच्चों को साथ लेकरके जाता है नम्बरवार। तो इस मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष का पहला पत्ता कौन है? कृष्ण की आत्मा दादा लेखराज। जिसके लिए बोला है एक के पतित बनने से सब पतित हो जाते हैं और एक के पावन बनने से सब पावन हो जाते हैं। ऐसे नहीं कि मनुष्य सृष्टि का बाप इस विषय सागर से निकलकरके क्षीर सागर में अकेला चला जावेगा।

And as regards the Brahma who left his body in 68-69, whose sakar body was left and became a subtle world dweller, a subtle bodied soul; it will be said about him also that 50 years are reduced because that soul completes its studies in 2018. Completion of his studies means war will begin on a large scale in the world. He is *sikeeladha* (long lost and now found) child of the Father. Before this haystack (world) catches fire, it is necessary that soul to complete his study. The Father alone cannot achieve an incorporeal stage forever. He takes the children along with him *number wise*. So, who is the first leaf of this human world tree? It is Krishna's soul, Dada Lekhraj, for whom it has been said that when one becomes sinful everyone becomes sinful and when one becomes pure everyone becomes pure. It is not that the father of this human world will go alone from the ocean of vices to the ocean of milk.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

ये दुनियाँ की बात है, दुनियाँ वालों की बात है कि बाप बाप नहीं रहेगा, पति पति नहीं रहेगा, सब संबंध झूठे हो जावेंगे। लेकिन ये तो पारलौकिक बाप बेहद का बाप है। सारी सृष्टि की मनुष्यात्माओं को नम्बरवार वापस ले जाने वाला है। तो जो मनुष्य सृष्टि का पहला पत्ता है उसको बीच में छोड़ जावेगा क्या? उसकी पढ़ाई पहले पूरी होनी है और पढ़ाई का मुख्य मुद्दा ही है कि सुप्रीम सोल बाप सर्वव्यापी नहीं है। दो, तीन, चार व्यापी नहीं है, एकव्यापी है। मुकर्रर रथ लेता है। इसीलिए सबसे पहले कृष्ण की आत्मा में ये बात बैठनी चाहिए कि गीता का भगवान आखरीन कौन है इस साकार मनुष्य सृष्टि पर। तो कृष्ण की आत्मा पहले सतोप्रधान बनती है। पहले बच्चा, फिर बाप। ये है ५०-६० वर्ष का राज़।

It is about the world, it is about the people of the world that 'the father will not remain a father, the husband will not remain a husband, all the relationships will become false'. But this *paarlokik* (of the other world) Father is the unlimited Father. He takes the human souls of the entire world *number wise*. So, will He leave the first leaf of the human world in between? His studies are to finish first. And the very main subject of the studies is that the Supreme Soul Father is not omnipresent. He is not present in two, three, four people. He is present in one. He takes the permanent chariot. This is why, first of all it should sit in [the intellect of] the soul of Krishna, ultimately who the God of the Gita is in this corporeal human world. So, the soul of Krishna becomes *satopradhan* first. First the child, then the Father. This is the secret of the 50-60 years.

<u>समयः 27.52-30.05</u>

जिज्ञासुः बाबा, जैसे आत्मा शरीर छोड़ती है इधर और उधर माँ के गर्भ में उसका घर बनता है। तो उसको कैसे मालूम पड़े कि यही मेरा घर है। याने होश नही रहती है उस समय तो। घर तो होशी आत्मा तुरंत जाती है ना? और उन आत्माओंको कैसे मलूम पडता है?

बाबाः एक होता है सूक्ष्म शरीर और एक होता है स्थूल शरीर। एक होती है सूक्ष्म इन्द्रियाँ और एक होती हैं स्थूल इन्द्रियाँ। एक आत्मा की सूक्ष्म स्टेज जैसे स्वप्न में सूक्ष्म स्टेज में आत्मा कहाँ-2 घूमती रहती है। ज्यादा ताकत सूक्ष्म में होती है या स्थूल में होती है? सूक्ष्म में जास्ति ताकत होती है। तो जब स्थूल शरीर छूट जाता है जो सूक्ष्म शरीर धारण करने वाली आत्मा ज्यादा पावरफुल हो जाती है।

जिज्ञासु: पहचान लेती है अपना गर्भ?

बाबा: पावरफुल होती है तभी तो अपने गर्भ को पहचानती है और वहाँ प्रवेश कर जाती है। उसको आकर्षण होता है। नहीं तो वो गर्भ तो शरीर छोड़ने से पांच महीने पहले ही (कैसे) तैयार हो जाता है।

Time: 27.52-30.05

Student: Baba, for example, when a soul leaves the body here, its home gets ready in the mother's womb there. So, how does it come to know: this is my home? I mean to say there is no consciousness at that time. Only a conscious soul goes home immediately, doesn't it? How do those souls come to know?

Baba: One is a subtle body and another is a physical body. One is the subtle organs and another is physical organs. One is the subtle stage of the soul. For example, the soul keeps wandering at various many places in the subtle stage. Does subtle have more power or does physical have

more power? Subtle has more power. So, when someone leaves the physical body, the soul that takes on a subtle body becomes more powerful.
Student: Does it recognize its womb?
Baba: It is powerful. Only then does it recognize its womb and enter it. It is pulled. Otherwise, [how] does the womb get ready five months before leaving the body?

जिज्ञासु: और बाबा कई आत्माओं के घर खाली रह जाते हैं आत्मा प्रवेश नहीं करती। कई पिन्ड खाली रह जाते हैं आत्मा प्रवेश नहीं करती है।

बाबा: पिन्ड खाली रह जाते हैं माना गर्भ में 9 महीने का बच्चा तैयार हो जाता है आत्मा प्रवेश नहीं करती?

जिज्ञासु: नहीं नौ का नहीं 4-5 (महीने) का होता है और आत्मा पहुँचती नहीं है।

बाबा: वो बात दूसरी हो सकती है महीने डेढ़ महीने का अंतर हो जाए बाकी जब पिन्ड पकेगा परिपक्व बनेगा, हाथ, पाव, नाक, आँख, कान तैयार हो जावेंगे तो आत्मा क्यों नहीं प्रवेश करेगी?
Student: Baba, homes (i.e. fetuses) of some souls remain empty; the soul is not able to enter. Some fetuses remain empty; the soul does not enter.
Baba: The fetus remains empty? Do you mean to say that the nine-month fetus becomes ready in the womb but the soul does not enter?
Student: No. Not nine months. When it is 4-5 months old the soul does not enter.
Baba: That can be a different case; there can be a difference of a month or one and a half months. As for the rest, when the fetus is completely ready, when the arms, legs, nose, eyes, ears get ready, why will the soul not enter?

समयः 30.07-36.30

जिज्ञासुः और बाबा ने बताया है कि याने ५५० करोड़ आत्मा सूक्ष्म वतन में रुकी रहेंगी, जब तक एक आत्मा शरीर छोड़ के नहीं जायेगी तब तक। वो कौनसी आत्मा होगी?

बाबाः एक बाप की आत्मा है। सबकी जिम्मेवारी किसकी है? सारी मनुष्य सृष्टिरूपी परिवार की जिम्मेवारी किसकी है?

जिज्ञासु: वो आत्मा वही रूकी रहेंगी तब तक सूक्ष्म वतन में?
Time: 30.07-36.30
Student: Baba has said that until one soul leaves its body, the 550 crore souls will remain in the subtle world. Which is that soul?
Baba: It is the soul of the one father. Who carries the responsibility of everyone? Who carries the responsibility of the entire human world family?
Student: Will those souls wait in the subtle world until then?

बाबा: बाप की जिम्मेवारी है या नहीं है इस मनुष्य सृष्टि की अंतिम आत्मा को भी वापस ले जाने के लिए? जैसे आत्माओं का बाप है उसकी जिम्मेवारी है मन-बुद्धि रूपी आत्माओं को पार लगाने की लेकिन मन-बुद्धि रूपी आत्मायें पार तब लगेंगी जब शरीर सहित हिसाब-किताब पूरे होंगे। तो 500 करोड़वीं या 700 करोड़वीं जो भी मनुष्य आत्मा हैं... उसका इस मनुष्य सृष्टि की अंतिम आत्माओं से कनेक्शन है। जब तक हिसाब-किताब पूरा न हो जाए तब तक उनको इस

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

सृष्टि पर रहना पड़ेगा। तो जो परिवार का मुखिया है उसको भी इस सृष्टि पर रहना पड़े। वो प्रजा का पिता है। 500-700 करोड़ जो भी इस मनुष्य सृष्टि की प्रजा है उसके प्रति उसकी जिम्मेवारी है।

Baba: Is it the responsibility of the father to take back the last soul of this human world also or not? For example, there is the Father of the souls, his responsibility is to take the souls in the form of the mind an intellect across, but the souls in the form of the mind and intellect will sail across only when all the karmic accounts along with the body will be over. So whichever is the 5 billionth or the 7 billionth soul. It has connection with the last souls of this human world. Until the karmic accounts are settled, they (the last souls) will have to stay in this world. So, the head of the family will also have to stay in this world. He is the father of the subjects. He has a responsibility towards all the 5-7 billion subjects of this human world.

इस मनुष्य सृष्टि में वो मनुष्य सृष्टि का बाप जिम्मेवार है। इसीलिए बोला है मुरली में स्वर्ग की दुनियाँ मेरी है तो नर्क की दुनियाँ मेरी नहीं है क्या? ये कौनसे बाप की बात है? रूहानी बाप तो 2500 वर्ष इस सृष्टि पर होता ही नहीं। वो तो नहीं कह सकता कि ये नर्क की दुनियाँ मेरी है और न वो नर्क की दुनियाँ बनाता है। वो कौनसी दुनियाँ बनाता है? वो तो सुख की दुनियाँ बनाता है। मनुष्य जितने भी होते हैं 500-700 करोड़ इन्क्लूडिंग प्रजापिता सब दुख देने वाले हैं। एक रूहानी बाप ही है जो सुख की सृष्टि रचता है।

That father of the human world is responsible in this human world. This is why it has been said in the Murli, if the heavenly world is mine, is the world of hell not mine? It is about which father? The Spiritual Father is not on this world for 2500 years; He certainly cannot say that this world of hell is mine. Nor does He create the world of hell. Which world does He create? He creates a world of happiness. All the 5-7 billion human beings *including Prajapita* give sorrow. It is only the Spiritual Father who creates the world of happiness.

ये जिस्मानी बाप जितने भी हैं इस सृष्टि पर चाहे धर्मपितायें हो, चाहे प्रजापिता हो जब तक उनमें ज्ञान नहीं होता, अपनी और अपने बाप की पहचान नहीं होती तब तक सब दुखदाई हैं और दुख की सृष्टि रचने वाले हैं। परंतु फिर भी रूहानी बाप का अंजाम है। उनका ये ज्ञान है जो बताता है कि रूह अकेले कुछ नहीं कर सकती। कुछ कर सकती है क्या? रूह को कुछ भी करने के लिए, मात्र ज्ञान सुनाने के लिए भी साकार शरीर ज़रूर चाहिए। जैसे ब्रहमा बाबा का आधा साजा हो गया भागीदार के साथ। तुम्हारा तन और मन काम करेगा दुकान में और हमारा धन काम करेगा। वो तो फिर भी साकार दुनियाँ की बात थी। आधा साजा हो गया। और ये तो पारलौकिक बाप है, बेहद का बाप है। ये बेहद का बाप इनका भी अंजाम है कि मेरे द्वारा जो भी कार्य होता है उसका प्रतिफल किसको मिलता है? भल मुकर्रर रथ में आता हूँ परंतु प्रतिफल किसको मिलता है? जिस भी शरीर में प्रवेश करता हूँ उसको प्रतिफल मिलता है।

All the physical fathers in this world, whether they are the religious fathers or Prajapita, unless they have knowledge, unless they have the realization of the self and the Father, everyone gives sorrow and they create a world of sorrow. But still, the Spiritual Father has made a promise; His knowledge tells us that the soul cannot do anything alone. Can it do anything? For a soul to be able to do anything, even for narrating knowledge, the corporeal body is certainly required. For

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

example, Brahma Baba entered into a partnership with his partner. 'Your body and mind will work for the shop and my wealth will be invested'. That was anyway about the corporeal world. That was equal partnership. And this is a *parlokik* (of the world beyond) Father, a Father in an unlimited sense. This unlimited Father also promises, who gets the fruits for the tasks performed by Me? Although I come in the permanent chariot, who gets the fruits? The body in which I enter gets the fruits.

जिज्ञासु: प्रजापिता को कहेंगे बाबा?

बाबा: प्रजापिता को ही कहा जाएगा। नहीं तो दूसरा भी कोई मनुष्य सृष्टि का हीरो पार्टधारी बन जाए। हाँ इसके लिए इतना ज़रूर है हिम्मते बच्चे तो मददे बाप। बड़ा कहावना अति दुख पावना। इस मनुष्य सृष्टि का बड़े ते बड़ा पार्टधारी है प्रजापिता। उसको मुरली में बोला है- नेक्स्ट टू गॉड इस प्रजापिता, नेक्स्ट टू गॉड इस नारायण, नेक्स्ट टू गॉड इस श्री कृष्ण और नेक्स्ट टू गॉड इस शंकर। ये चारों ही नाम एक व्यक्तित्व के नाम हैं या अलग-2 व्यक्तित्व हैं? एक ही है।

Student: Will it be said for Prajapita, Baba?

Baba: It will be said for Prajapita only. Otherwise, some other human being could have become the hero actor. Yes, it is sure that if the children show courage, the Father helps. The higher the name and fame, the greater the pain *(Bada kahavna ati dukh pavana).* The greatest actor of this human world is Prajapita. For him, it is said in the Murli, next to God is Prajapita, next to God is Narayan, next to God is Shri Krishna and next to God is Shankar. Are all these four names of one personality or of different personalities? [They are the names of] only one personality.

<u>समयः 37.55-42.28</u>

जिज्ञासुः बाबा, ये कहा है कि बाप आया है तो पतितों को पावन बनाकर साथ ले जायेगा। कोई योगबल से पावन बनेंगे।

बाबाः हाँ, हाँ, योगबल से पावन बनेंगे लेकिन योगबल क्या हवा में चलाया जाएगा? जो योगबल है वो कर्मयोग के आधार पर होगा या सिर्फ योग होगा?

जिज्ञासु- कर्म योग।

बाबा- और कर्म कर्मेन्द्रियों से किया जाता है या सिर्फ ज्ञान इन्द्रियों से किया जाता है या सिर्फ मनसा के वायब्रेशन से किया जाएगा?

जिज्ञासु: कर्मेन्द्रियों से।

बाबा: कर्मेन्द्रियों से किया जाएगा। तो बाप आया हुआ है बड़ा परिवार है, बेहद का परिवार है तो ज़रूर ऐसा कर्म योग सिखाता है जो मनुष्य सृष्टि में और किसी मनुष्य ने नहीं सिखाया हो। कोई बड़े ते बड़े महात्मा ने भी न सिखाया हो, धर्मपिता ने भी न सिखाया हो। ये राज़योग है। राज़योग में कोई राज़ भरा हुआ है और उस राज़ को जानने वाले नम्बरवार हैं। अव्वल नम्बर राज़ को जानने वाला 100% एक ही होगा। उसको कहते हैं सुप्रीम टीचर, सुप्रीम बाप, सुप्रीम गुरू और गुरू साकार होता है, दलाल होता है या सिर्फ निराकार होता है? साकार में निराकार स्टेज वाला होता है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 37.55-42.28
Student: Baba, it has been said that when the Father has come He will purify the sinful ones and take them [home] along with Him. Some will become pure through the power of *yog (yogbal).*
Baba: Yes, yes, they will become pure through the power of *yog* but will the power of *yog* be used in the air? Will the power of *yog* be on the basis of *karmayog* (staying in the Father's remembrance while performing actions) or will it be just *yog*?
Student: *Karma yog.*
Baba: And are actions performed through the organs of action, through the sense organs or are they performed just through the vibrations of the mind?
Student: Through the organs of action.
Baba: It will be done through the organs of action. So, the Father has come. It is a big family, an unlimited family. So, He certainly teaches such *karmayog* which no human being has taught in the human world, which no biggest saint has taught, which no religious father has taught. This is *Rajyog*. There is a *raaz* (secret) in this *Rajyog* and those who know this secret are *number wise*. There will be only one who knows the secret 100% in the first place. He is called the Supreme Teacher, Supreme Father and Supreme Guru. Moreover, is a Guru corporeal, a *dalal* (a middleman) or just incorporeal? He is the one with an incorporeal stage in a corporeal (body).

जिज्ञासु: कोई भोगबल से पावन बनेंगे, कोई सजा खाकर पावन बनेंगे।
बाबा: भोगबल किसे कहा जाता है और योगबल किसे कहा जाता है? भोगबल उसे कहा जाता है जैसे पटियाला का राजा हो या कोई मैसूर का राजा हो, या कोई विकारी दुनियाँ का हिस्ट्री में राजा हुआ हो, ढेर रानियों वाला हो और उसको ढेर बच्चे पैदा हो गए। तो जो बच्चे पैदा हुए वो भोग से पैदा हुए या योग से पैदा हुए?
जिज्ञासु: भोग से।
बाबा: भोग से। अगर बच्चे न पैदा हुए होते तो उसे क्या कहा जाएगा भोगी या योगी? बोलो।
जिज्ञासु: योगी।
बाबा: योगी कहेंगे। ऐसे ही यहाँ भी है। यहाँ बेहद का बाप आया हुआ है। बेहद का परिवार है, बेहद की सजनियाँ हैं परंतु प्रैक्टिकल में साबित क्या होना चाहिए? भोगी साबित होना चाहिए, योगी साबित होना चाहिए? रिज़ल्ट क्या देखने में आना चाहिए?
जिज्ञासु: योगी।
बाबा: वो ही आएगा।
Student: Some will become pure through the power of physical pleasures (*bhogbal*) and some will become pure by suffering punishments.
Baba: What is *bhogbal* and what is *yogbal*? *Bhogbal* means, for example, there is the king of Patiala or the king of Mysore or any king of the vicious world [mentioned] in the history. Suppose he has numerous queens and numerous children are born to him. So, were those children born through the power of *bhog* (pleasure) or through the power of *yog*?
Student: Through pleasures.
Baba: Through pleasures. If children were not born, what will he be called, *bhogi* or *yogi*? Tell me.
Student: *Yogi.*

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: He will be called *yogi*. Similar is the case here. Here the unlimited Father has come. It is an unlimited family; there are wives in an unlimited sense. But what should be proved in practical? Should He be proved to be a *bhogi* or a *yogi*? What result should be visible?
Student: *Yogi.*
Baba: Only that [result] will come out.

जिज्ञासु: कोई आत्मायें बाबा सजा खाकर पावन बनेंगी। पद कम हो जाएगा उन आत्माओं का।
बाबा: बिलकुल। क्यों भोगी बनते हैं? जब बाप का ऑर्डीनेन्स है पवित्र बनने का...। अपवित्र बनेंगे तभी तो भोगी बनेंगे, तभी तो सजायें खायेंगे।
जिज्ञासु: सजाओं का स्वरूप क्या होगा बाबा और पद किस प्रकार से कम होगा?
बाबा: सजाओं का स्वरूप ऐसा होगा जैसा 63 जन्मों में कभी भी सजा नहीं खाई होगी। इतनी यंत्रणा होगी। अंत मते सो गते हो जावेगी। जो हाय-2 करके शरीर छोड़ेंगे उनकी गति अच्छी होगी या जो खुशी-2 शरीर छोड़ेंगे उनकी गति अच्छी होगी? सजायें खायेंगे तो हाय-हाय करेंगे। एक सम्प्रदाय चला है, अई अप्पा स्वामी। बाप होता है बच्चों को सुधारना चाहता है। बार-2 बोलता है ऐसा नहीं करो ऐसा करो। बच्चे नहीं मानते हैं, हठ करते हैं। तो बाप क्या करता है आखरीन? सड़ोका लेके सड़ोका-सड़ोक, सड़ोका-सड़ोक तो मुँह में से क्या निकलता है? अई अप्पा, अई अप्पा, अई अप्पा।
Student: Baba, some souls will suffer punishments and become pure. The post of those souls will reduce.
Baba: Certainly. Why do they become *bhogi* (pleasure seekers)? When the Father has issued an ordinance to become pure.... They will become *bhogi* only when they become impure. Only then will they suffer punishments.
Student: Baba, what will be the form of punishments and how will the post reduce?
Baba: The form of punishments will be unlike any punishments you would have suffered in the 63 births. The pain will be so great. As the thoughts in the end so shall be the destination. Will the destination of those who will leave their bodies crying be good or will the destination of those who will leave their bodies happily be good? If they suffer punishments they will cry. There is a community, *Ai Appa Swami* (A Hindu deity worshipped in south India). A father wants to reform his children. He tells them again and again, "do not do like this, do like this". Children do not listen, they become obstinate. So, what does the father do ultimately? He takes a stick and starts beating. So, what sound emerges from the mouth (of children)? *Ai appa* (Oh no father!), *ai appa, ai appa*.

समयः 42.38-45.28

जिज्ञासुः बाबा बीज सुधरता है तो झाड़ सुधरता जाता है और बीज पतित बनता है तो सारा झाड़ पतित बन जाता है।
बाबाः नहीं। ये बोला है, बीज अपने में कुछ भी नहीं है। बीज को अगर धरणी न मिले तो वृक्ष या पौधा बन जाएगा? नहीं। धरणी को सुधारने के ऊपर विशेष ध्यान दिया जाता है या बीज को सुधारने के लिए विशेष ध्यान दिया जाता है? जो देशी बीज होता है उसको सुधारने के लिए

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है या विदेशी बीजों को कैमिकल में डालकरके सुधारने की ज्यादा ज़रूरत पड़ती है?

जिज्ञासु: विदेशी में।

Time: 42.38-45.28

Student: Baba, when the seed reforms the tree reforms. And when the seed becomes sinful, the entire tree becomes sinful.

Baba: No. It has been said, a seed is nothing on its own. If the seed does not get land, will a tree or plant emerge? No. Is special attention paid to improve the land or is special attention paid to improve the seed? Are more efforts required to improve the indigenous (i.e. Indian) seed or is it required to improve the foreign seeds more by adding chemicals?

बाबा: विदेशी बीजों को कैमिकल में डालकरके ज्यादा सुधार करते हैं और जो देशी बीज होता है उसको ज्यादा सुधारने के ज़रूरत नहीं होती। ऐसे ही जो सूर्यवंशी आत्माओं का स्पेशल बाप है....। क्या? उसको ज्ञान देने के लिए परमात्मा बाप को ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती वो ज्ञान की बातों को इशारे से उठाता है इसीलिए बाप बोलते हैं मैं जानवर में आऊँगा क्या? बैल में आऊँगा क्या? बैल में अगर आऊँगा तो भी वो नाली के सामने खड़े होकरके नाली की पेशाब ही पिएगा। इसीलिए शिव के मंदिर में नाली के बाहर कौन बैठा हुआ दिखाया गया है? बैल। बैल में नहीं आता हूँ समझाने के लिए। किसमें आता हूँ? मनुष्य में आता हूँ। वो मनुष्य भी न कहें उसे वो तो जन्म-जन्मांतर का ऐसा पुरूषार्थी है जो देव-देव महादेव कहा जाता है। उनके लिए गायन है वो कभी मरता नहीं है। द्वापर के आदि में भी सारी सृष्टि देवताओं की जैसे मृतप्राय: हो जाती है लेकिन देवी-देवता सनातन धर्म प्राय: लोप हो जाता है क्या? हो जाता है? नहीं। अंतिम जन्म में आकरके वो आत्मा भी माया की चपेट में आती है परंतु फिर भी किसी धर्म सम्प्रदाय के आधीन नहीं करती है अपने को। भल नास्तिक बन जाए और नास्तिक धर्म कोई धर्म नहीं है।

Baba: Foreign seeds are improved more by putting them in chemicals. And the indigenous seed does not require much improvement. Similarly, the special father of the *Suryavanshi* souls.... What? The Supreme Soul Father does not have to make more efforts to give knowledge to him. He picks up the topics of knowledge through hints. This is why the Father says, will I come in an animal? Will I come in a bull? Even if I come in a bull, he will stand in front of the drain and drink the urine of the drain. This is why, who is shown to be sitting outside the drain in the temple of Shiv? A bull. I do not come in a bull to explain. In whom do I come? I come in a human being. He cannot even be called a human being. He is such a *purusharthi* (one who makes spiritual effort) of many births that he is called Dev-Dev-Mahadev. It is famous about him that he never dies. Even in the beginning of the Copper Age, the entire world of deities almost dies, but does the deity religion disappear? Does it? No. In the last birth even that soul comes under the influence of Maya, but still he does not let himself be under the influence of any religious community although he becomes an atheist (*naastik*); and atheism is not any religion.

समयः 45.30-55.00

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः बाबा, गीता जो है कृष्ण की गीता बोला है कि पूरी ही खंडित हो गई है। तो बाबा खंडित होने का आधार क्या है?

बाबाः गीता माता है या गीता किताब है सिर्फ जड़ है?

जिज्ञासु: माता है।

बाबा: माता है। कोई माता पिता के साथ माता बनी। शादी हुई बच्चे पैदा हुए। और दूसरा पति बना ले और दूसरे बच्चे पैदा कर ले सिर्फ एक ही बार तो सारी माता खण्डित कही जाएगी या ऊपर से खण्डित कही जाएगी, नीचे से खण्डित कही जाएगी या बीच में से खण्डित कही जाएगी।

जिज्ञासु: सारी ही।

Time: 45.30-55.00

Student: Baba, it has been said that Gita, Krishna's Gita has been completely impaired. So, what is the basis of impairment?

Baba: Is Gita a mother or is Gita just a non-living book?

Student: She is a mother.

Baba: She is a mother. A mother became a mother with the help of a father. They got married. They gave birth to children. And if she adopts someone else as a husband and gives birth to children through him even once, then will the entire mother be said to be impaired or just from above or from below or from the middle?

Student: Entirely.

बाबा: सारी ही खण्डित हो गई। ये कोई जड़ गीता माता की बात नहीं है। ये चैतन्य गीता माता है कोई। झूठी गीता बनती है। तो नर्क बन जाता है। और सच्ची गीता से स्वर्ग बन जाता है। तो गीतायें भी दो हो गईं और मातायें भी दो हो गईं। एक है जगतमाता, सिर्फ सूर्यवंशियों की माता है या इस्लामी, बौद्धि, क्रिश्चियन आदि सबकी माता है? सबकी माता, धर्म वालों की माता है। दुष्ट धर्म वालों की भी माता है, राक्षसों की भी माता है। और एक है भारत माता। किसकी माता है सिर्फ? सिर्फ भारतवासियों की माता।

Baba: She is completely impaired. It is not about a non-living mother Gita. There is a living mother Gita. When she becomes a false Gita hell is created. And through true Gita heaven is created. So, there are two Gitas as well as two mothers. One is world mother. Is she the mother of only the *Suryavanshis* or is she the mother of everyone, the Islamic people, Buddhists, Christians etc? She is the mother of everyone. She is the mother of people belonging to all the religions. She is the mother of those who belong to wicked religions as well as the mother of demons. And another is the mother of India. Whose mother is she? She is the mother of just *Bharatwasis* (residents of Bharat)

.

भारत की माताओं का क्या गायन है? भारत की माताओं का गायन क्या है? भारत की नदियों का गायन क्या है? विदेश की नदियों में नहीं नहाने जाते हैं। पानी तो वो ही है। पहाड़ से वो पानी भी आता है, वो भी आता है। विदेश की नदियों में क्यों नहीं जाते? भारत की नदियों में जाते हैं। वो भी दक्षीण भारत की नदियों में नहीं उतना महत्व है। कौनसी नदियों का महत्व है? उत्तर भारत की नदियों का महत्व है। तो ये भक्तिमार्ग में जो रसम चल रही है, उसका कारण क्या है? उसका कारण यही है कि भारत में जब स्वर्ग स्थापन होता है तो उत्तर भारत में स्वर्ग स्थापन

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

होता है। गंगा, यमुना के कंठे पर स्वर्ग के गाँव बसते हैं। और वहाँ पवित्र माताओं ने निवास किया है। ऐसी मातायें होंगी जो कृष्ण की दृष्टि राधा में और राधा की दृष्टि कृष्ण में ही डूबेगी। आज की कितनी भारत मातायें हैं। जो नर्क का दरवाजा खोल के बैठ जाती हैं। व्यभिचार का दरवाजा खोलके बैठ जाती हैं। ऐसी माताओं को फिर नर्क बनाने वाला कहें या स्वर्ग बनाने वाला कहें?

What is famous about the mothers of India? What is famous about the mothers of India? What is famous about the rivers of India? People don't go to bathe in the rivers of foreign countries. The water is the same. That water as well as this water comes from the mountains. Why don't people go to the rivers of foreign countries [to bathe]? They go to [bathe in] the rivers of India. Moreover, there is not so much importance of the rivers of south India. Which rivers are important? There is importance of the rivers of northern India. So, what is the reason for this ritual of the path of *bhakti*? The reason for it is that when heaven is established in India, it is established in north India. Villages come up on the banks of Ganga and Yamuna. And pure mothers have resided there. There will be such mothers that Krishna will see only Radha and Radha will see only Krishna. There are so many mothers in India who keep the doors of hell open. They keep open the doors of adultery. Should such mothers be called creators of hell or creators of heaven?

ऐसे ही शूटिंग पिरीयड में; जानते हैं, दुनियाँ के सामने अंजाम करते हैं कि भगवान बाप आया हुआ है। भगवान बाप खास करके कन्याओं माताओं के लिए आया हुआ है। क्यों? ऐसे क्यों? ये पार्शिलिटी किसलिए? भगवान आया हुआ है। भगवान तो रूहों का बाप है। रूहों का बाप रूहों को क्यों नहीं देखता? स्त्री पुरूष क्यों देखता? कन्याओं-माताओं के हाथ में ही क्यों झंडा देता है स्वर्ग का गेट खोलने के लिए। पुरूषों के हाथ में क्यों नहीं देता ये जिम्मेवारी?

जिज्ञासु: प्योरिटी की पावर।

बाबा: प्योरिटी की पावर? है प्योरिटी की पावर?

जिज्ञासु: कन्याओं-माताओं में है।

Similarly, in the shooting period, they know, they declare to the world that God the Father has come. God the Father has especially come for virgins and mothers. Why? Why is it so? Why this partiality? God has come. God is the Father of souls. Why doesn't the Father of souls see the souls? Why does He see them as women and men? Why does He give the flag of opening the gate of heaven only in the hands of virgins and mothers? Why does He not give this responsibility to men?
Student: The power of purity.
Baba: Power of purity? Is there power of purity?
Student: It is in the virgins and mothers.

बाबा: हाँ। कन्याएँ-माताएँ जो खास भारत की हैं उनमें फिर भी पवित्रता के प्रति विशेष रिगार्ड है। ऐसे नहीं कहेंगे कि सबमें रिगार्ड है। पुरूषों में वो रिगार्ड नहीं है। इसीलिए सब पुरूषों को कहा, सब पुरूष दुर्योधन-दु:शासन। कन्याओं-माताओं में कोई-2 होती हैं जो सुर्पणखा पुतना का पार्ट बजाती हैं। नहीं तो मोस्टली भारत की ललनायें मातायें स्वर्ग का गेट खोलने वाली हैं। तो कारण क्या हुआ? माताओं को ये जिम्मेवारी क्यों दी गई? क्योंकि कलियुग के अंत में माताओं के

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

सारे अधिकार छीन लिए जाते हैं माताओं का रिगार्ड खत्म कर दिया जाता है। माताएँ कन्याएँ सबसे जास्ति गरीब बन जाती हैं। भगवान बाप किसके लिए आता है? गरीबों के लिए आता है। वो गरीबनिवाज है।

Baba: Yes. The virgins and mothers especially of India have special regard for purity. It cannot be said that all of them have regard (for purity). Men do not have that regard (for purity). This is why it has been said for all men: all the men are Duryodhans and Dushasans. Among virgins and mothers there are a few who play the part of Surpanakha, Pootnaa[1] (who do not have regard for purity). Otherwise mostly the daughters, mothers of India open the gates to heaven. So, what is the reason? Why have the mothers been given this responsibility? It is because in the end of the Iron Age all the rights of mothers are taken away. Regard for mothers ends. Mothers and virgins become the poorest of all. For whom does God the Father come? He comes for the poor ones. He is the friend of the poor ones (*garibniwaz*).

इसीलिए बोला, भारत माता शिव शक्ति अवतार अंत का यही नारा है। ऐसे नहीं बोला जगतमाता शिव शक्ति अवतार। क्यों नहीं बोला? जगतमाता भी है। जगदम्बा का मेला लगता है। बहुत बड़ा मेला लगता है। इतना बड़ा मेला कोई देवी-देवता का नहीं लगता । इससे क्या साबित होता है? साबित होता है कि जगतम्बा का पार्ट बजाने वाली ने परमात्मा बाप के प्रक्टिकल पार्ट के साथ सबसे जास्ति मिलन मेला मनाया है। इसीलिए भक्तिमार्ग में उसकी यादगार चलती है मेले की, जगदम्बा के मेले की, बड़ा मेला लगता है। लेकिन जगदम्बा महाकाली बनती है। काली का पार्ट भी बजाती है। और काली को ही चंडिका देवी कहा जाता है। धारणाओं के हिसाब से लास्ट नम्बर की देवी है। अव्वल नम्बर की देवी नहीं है। भंगी, चमार, चोर, चकार, डकैत महाकाली की और काली की ज्यादा पूजा करते हैं। जो श्रेष्ठ कुल के ब्राह्मण होते हैं वैष्णव कुल के होते हैं, वो महाकाली की पूजा नहीं करते हैं। वो है जगदम्बा जो महाकाली बनती है। इसीलिए तिरूपती के मंदिर में दो देवीयाँ दिखाई गईं हैं। एक श्रीदेवी और दूसरी पदमावती। पदम फूल के ऊपर विराजमान। जैसे पदम का फूल, कमल का फूल कीचड़ में रहता है। लेकिन बुद्धियोग से एक बाप दूसरा न कोई। जैसे महाकाली के जो पुराने चित्र हैं, उनमें दिखाया गया कि महाकाली शंकर की छाती पर पाँव रखे हुए हैं परंतु मस्तक में शिव शंकर भोलेनाथ का चित्र भी दिया हुआ है।

This is why it has been said that - Mother India, the incarnation of *Shiv-Shakti* – this is the slogan of the end. It has not been said that world mother is an incarnation of *Shiv Shakti*. Why has it not been said so? There is world mother as well. Jagadamba's fair is organized. A very big fair is organized. Such a big fair is not organized for any other deity. What does it prove? It proves that the one who plays the part of Jagadamba has enjoyed the benefit of meeting (*Milan-mela*) with the practical part of the Supreme Soul Father more than anyone else. This is why in the path of *bhakti* its memorial is seen in the form of a fair, the fair of Jagadamba. A big fair is organized. But Jagadamba becomes Mahakali. She also plays the part of Kali. And Kali is also called Chandika Devi. From the point of view of inculcations (*dharania*) she is the last Devi, not the number one Devi. The *Bhangis, Chamars* (lower castes among Hindus), thieves, lowly workers, dacoits worship Mahakali and Kali more. The Brahmins belonging to the higher clans, the Brahmins belonging to the Vaishnavite clans do not worship Mahakali. She is Jagadamba who becomes Mahakali. This is why two *devis* have been shown in the temple of Tirupati. One

[1] demoniac characters in Ramayan and Mahabharat

is Shridevi and the other is Padmavati. She (Padmavati) is seated on the lotus flower (*padam phool)*, just as the lotus flower grows in sludge but in the intellect there is one Father and none else. For example in the old pictures of Mahakali, it has been shown that Mahakali has placed her legs on the chest of Shankar. But the picture of Shiv-Shankar Bholenath has also been shown on her forehead.

और ये मान्यता भी है कि असुरसंघारकारिणी नम्बरवार शक्तियों का पार्ट है। असुर संघारणी शक्तियाँ बनती हैं। भगवान बाप का या देवताओं का ये पार्ट नहीं है। इसीलिए मुरली में बोला, शंकर क्या करता है? कुछ भी नहीं। वास्तव में शंकर द्वारा विनाश जो गाया हुआ है वो शंकर नहीं करता अपनी कर्मेन्द्रियों से विनाश। कौन करता है? महाकाली करती है। इम्प्योरिटी से होता है विनाश और पवित्रता से होती है स्थापना। इसलिए श्रीदेवी स्थापना के निमित्त है और काली विनाश के निमित्त है।

And it is also believed that the Shaktis play the part of destroying the demons *numberwise* (according to their capacity). Shaktis become the slayers of demons. God, the Father or male deities do not play this part. This is why it has been said in the Murlis, what does Shankar do? Nothing. Actually, the destruction that is famous about Shankar is not carried out by Shankar through his bodily organs. Who does that? Mahakali does that. Impurity brings about destruction and purity brings establishment. This is why Shridevi is an instrument for establishment and Kali is an instrument for destruction.

समयः 56.20-58.04

जिज्ञासुः बाबा, जैसे ६८ की अभी वाणियाँ चल रही हैं। तो ऐसे १८ जनवरी, ६९ की वाणियां जब पूरी हो जाएंगी, क्लेरिफिकेशन हो जायेगा...।

बाबाः हो जायेगा।

जिज्ञासुः उसके बाद क्या डायरेक्ट वाणियाँ चलेंगी?

बाबाः उसके बाद डायरेक्ट वाणी? माना अभी डायरेक्ट वाणी नहीं चल रही है?

जिज्ञासु: अभी तो क्लेरिफिकेशन हो रहा है।

बाबा: हाँ। तो टीचर का पार्ट होता है तो क्या करेगा वो? स्टुडेन्ट टेक्स्ट बुक पढ़ेगा और टीचर टेक्स्ट बुक पढ़ेगा या उसका क्लेरिफिकेशन देगा?

जिज्ञासु: क्लेरिफिकेशन देगा।

बाबा: तो स्टुडेन्ट कौन है अव्वल नम्बर और क्लेरिफिकेशन देने वाला कौन है? अरे! कौनसी आत्मा स्टुडेन्ट है? ब्रह्मा।

Time: 56.20-58.04

Student: Baba, the vanis of the year 68 are being narrated (i.e. clarified) now. So, when the *vanis* upto 18th January, 69 are completed, when their clarification is over.....

Baba: It will be over.

Student: After that will the direct *vanis* be narrated?

Baba: Direct *vani* after that? Does it mean that direct *vanis* are not being narrated now?

Student: Now the clarification [of the murlis] is taking place.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Yes. So, when it is the teacher's part, what will he do? Student will read the text book. And will the teacher read the text book or will he give its clarification?
Student: He will give the clarification.
Baba: So, who is the number one student and who gives the clarification? Arey, which soul is the student? Brahma.

जिज्ञासु: नहीं। ये वाणी जब पूरी हो जायेंगी जैसे...।
बाबा: वाणियाँ कभी पूरी होती हैं?
जिज्ञासु: नहीं। 69 तक का क्लेरिफिकेशन पूरा हो जाएगा।
बाबा: 69 तक की ही वाणियाँ हैं? गीता का ज्ञान 69 तक का ही है क्या?
जिज्ञासु: ब्रह्मा बाबा के मुख से निकली हुई जो वाणियाँ हैं।
बाबा: ब्रह्मा बाबा के मुख से जो निकली हुई और अभी जो क्लेरिफिकेशन चल रहा है वो तो सिर्फ माउन्ट आबू की छपी हुई वाणियाँ का चल रहा है। अभी माउन्ट आबू से जो कैसेट में डायरेक्ट ब्रह्मा के मुख से निकला है वो तो माल अभी आया ही नहीं है।
जिज्ञासु: फिर इसके बाद वो वाणियाँ आयेंगी?
बाबा: नहीं आना चाहिए? आपको डायरेक्ट मुख से जो ब्रह्मा के निकला है वो एक-2 लब्ज़ मिले वो नहीं चाहिए?
जिज्ञासु: चाहिए।
बाबा: चाहिए ना? फिर क्या बात है?
जिज्ञासु: यही तो पूछ रहे हैं।
बाबा: तो जवाब मिल गया ना?
Student: No. When these *vanis* are over, like... .
Baba: Do the *vanis* ever finish?
Student: No. When the clarification of the *vanis* upto 69 finish.
Baba: Are there *vanis* only upto 69? Is the knowledge of Gita limited only to 69?
Student: The *vanis* that have emerged from the mouth of Brahma Baba.
Baba: The *vanis* that have emerged from the mouth of Brahma Baba and the clarification that is being given now pertains only to the *vanis* published from Mt.Abu. The material that has emerged directly from the mouth of Brahma contained in cassettes in Mt.Abu has not at all emerged now.
Student: Will those *vanis* emerge after that?
Baba: Should they not emerge? Don't you want every word that has emerged from the mouth of Brahma directly?
Student: We want.
Baba: You want it, don't you? Then what is the matter?
Student: This is what I am asking.
Baba: So, you got the reply, didn't you?

<u>समयः 58.05-01.00.35</u>

जिज्ञासुः बाबा, जैसे बताते हैं कि लौकिक में प्रजापिता भी ब्राह्मण परिवार से और दादा लेखराज वो भी ब्राह्मण परिवार से और जो दो माताएं थी वो भी ब्राह्मण परिवार से। तो परमात्मा जो

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

रथ लेता है वो भी ब्राह्मण समाज को देखते नहीं हैं ना? यानि परमात्मा तो समाज नहीं देखते हैं।

बाबाः परमात्मा समाज तो नहीं देखते हैं लेकिन 63 जन्मों के कर्म को देखते हैं कि नहीं देखते हैं? नहीं देखते?

जिज्ञासु: देखते हैं।

बाबा: तो कोई आत्मा ने ऐसा कर्म किया कि अंतिम जन्म में भी श्रेष्ठ परिवार मिलता है। समाज में अभी भी ब्राह्माणों की बहुत मान्यता है।

जिज्ञासु: वही तो दिख रहा है भगवान ने भी रथ लिए तो वो भी...।

बाबा: तो कर्मों के आधार पर लिए कि बिना कर्मों के आधार पर लिए?

Time: 58.05-01.00.35

Student: Baba, for example, it is said that Prajapita as well as Dada Lekhraj are from Brahmin families from the *lokik* point of view. And the two mothers that were there were also from Brahmin families. So, the Supreme Soul does not take into account the Brahmin community while adopting the chariot, does He? I mean to say the Supreme Soul does not take the community into account.

Baba: The Supreme Soul does not see the community, but does He see the actions of the 63 births or not? Does He not see?

Student: He sees.

Baba: So, some soul performed such actions that it gets a righteous family even in the last birth. Even now Brahmins are respected a lot in the society.

Student: That is what we can see. The chariots that God adopted are also….

Baba: So, did He adopt (the chariot) on the basis of the actions or without the basis of actions?

जिज्ञासु: एक तरफ तो बाबा कहते हैं जाति के ब्राह्मण और कर्मों के ब्राह्मण।

बाबा: बाबा कहाँ कहते हैं जाति के ब्राह्मण और कर्म के ब्राह्मण? बाबा तो कर्मों की थ्योरी को बताते हैं। बनी बनाई बन रही अब कछु बननी नाए। जिन आत्माओं ने जो कुछ भी बनाया है वो कहाँ बनाया ? इसी 63 जन्मों में बनाए इसी दुनियाँ में। तो जो राम की आत्मा है, कृष्ण की आत्मा है, राधा की आत्मा है, सीता की आत्मा है, जो भी श्रेष्ठ आत्मायें हैं वो सृष्टि रूपी रंगमंच पर अंतिम जन्म ब्राह्मण परिवार में लेती है तो कोई घाटे का सौदा है क्या? उन्होंने कोई घाटे का कर्म किया क्या? अच्छा कर्म किया या बुरा कर्म किया जो ब्राह्मण परिवार में जाकर जन्म लिया लौकिक में भी? अच्छा किया।

Student: On one side Baba says that there are Brahmins by caste (i.e. birth) and there are Brahmins on the basis of actions performed.

Baba: Baba does not speak about Brahmins by caste and Brahmins by actions. Baba tells the theory of actions. Whatever was preordained is being enacted. Nothing new is to be enacted now. Whatever a soul has made for itself – where did it make it? It made it in these very 63 births in this world. So, all the elevated souls including the soul of Ram, the soul of Krishna, the soul of Radha, the soul of Sita are born in a Brahmin family in the last birth on the world stage. So, is it a deal of loss? Did they perform any action that brings loss? Did they perform good actions or bad actions that they were born in a Brahmin family even in the *lokik* world? They performed good [actions].

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: ब्रहमा बाबा ने सफलता तो नहीं पाई ना? ब्रहमा बाबा ने सब कुछ दिया। सब कुछ तन, मन, धन लगा दिया फिर भी...।

बाबा: माना आपने सफलता पा ली?

जिज्ञासु: नहीं हमने तो नहीं ब्रहमा बाबा ने...।

बाबा: ब्रहमा बाबा ने जो पहली पीढ़ी है सतयुग की उसमें पहला पत्ता बन गया, नारायण बन गया, मंदिरों में उनका चित्र बनाया जाता है लक्ष्मी-नारायण का, और क्या चाहिए?

जिज्ञासु: बाबा ने ही तो बताया है कि ब्रहमा ने सफलता नहीं पाई।

बाबा: ब्रहमा दादा लेखराज शरीरधारी ने सफलता नहीं पाई। लेकिन जो सूक्ष्म शरीर से आत्मा पुरूषार्थ कर रही है उससे तो सफलता पाई ना? सूक्ष्म शरीर को महत्व नहीं देंगे?

Student: Brahma Baba did not achieve success, did he? Brahma Baba gave everything. He invested everything including his body, mind and wealth, yet....
Baba: Does it mean that you achieved success?
Student: No, not me. Brahma Baba....
Baba: Brahma Baba became the first leaf in the first generation of the Golden Age, He became Narayan, pictures of him as Lakshmi-Narayan are depicted in the temples. What else do you require?
Student: Baba has Himself said that Brahma did not achieve success.
Baba: Brahma Dada Lekhraj, the bodily being did not achieve success. But the soul who is making *purusharth* (spiritual effort) through the subtle body achieved success didn't it? Will you not give importance to the subtle body?

समयः 01.00.37-01.00.35

जिज्ञासुः बाबा, गुल्ज़ार दादी शरीर छोड़ जायेगी तो ब्रहमा बाबा फिर किसी और दादी के तन में आयेंगे क्या?

बाबाः तुमको सर दर्द क्यों हो रहा है? जैसे और भूत प्रेत आत्मायें कोई ना कोई में प्रवेश करती रहती हैं ऐसे ब्रहमा की आत्मा कोई ना कोई में प्रवेश करती रहें तो हमारा क्या मुसीबत आ रही है?

Time: 01.00.37-01.00.35
Student: Baba, when Gulzar Dadi leaves her body, will Brahma Baba come in any other Dadi's body?
Baba: Why are you worrying about it? Just as the souls of ghosts and spirits enter some body or the other, what harm does it bring to us if Brahma's soul keeps entering someone or the other?

………………………………………………………………………………………………
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info